International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 11, November 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** :, editoraarf@gmail.com

छन्दःशास्त्रीय परम्परा और उसका भेदात्मक स्वरूप

डॉ० भवानीशंकर शर्मा 'महाजनीय'

छन्दःशास्त्र को लिखने की परम्परा बहुत प्राचीन है। इसका प्राचीन नाम **छन्दोविचिति** है। छन्दोनुशासन,छन्दोविवृत्ति,छन्दोमान आदि नाम भी शास्त्रभेद से प्राप्त होते हैं। जब हम **छन्दःशास्त्र** की परम्परा की बात करें तो **रामानुजाचार्य** के गुरु आचार्य **यादवप्रकाश** द्वारा**'पिङ्गलसूत्र'**की समाप्ति पर दिया गया यह श्लोकबहुत महत्त्वपूर्ण है,जिसमें **छन्दःशास्त्र** के परम्परागत आचार्यों का उल्लेख किया गया है—

छन्दोज्ञानमिदं भवाद्भगवतो लेभे गुरूणां गुरु-
स्तस्माद् दुश्च्यवनस्ततोऽसुरगुरुर्माण्डव्यनामा ततः।
माण्डव्यादपि सैतवस्तत ऋषिर्यास्कस्ततः पिङ्गल-
स्तस्येदं यशसा गुरोर्भुवि धृतं प्राप्यास्मदाद्यैः क्रमात्॥

इसके अनुसार **शङ्कर** से वृहस्पति ने ,**वृहस्पति** से दुश्च्यवन ने ,**दुश्च्यवन** से शुक्राचार्य ने ,**शुक्र** से माण्डव्य ने ,**माण्डव्य** से सैतव ने ,**सैतव** से यास्कऋषि ने ,**यास्क**से पिङ्गल ने **छन्दःशास्त्र** का ज्ञान प्राप्त किया था। ऐसा ही एकअन्य श्लोकभी प्राप्त होता है,उसमें भी छन्दःशास्त्र की परम्परा का उल्लेख किया गया है—

छन्दःशास्त्रमिदं पुरा त्रिनयनाल्लेभे गुहोऽनादित-
तस्मात् प्राप सनत्कुमारमुनिस्तस्मात् सुराणां गुरुः।
तस्मादेवपतिस्ततः फणिपतिस्तस्माच्च सत्पिङ्गल-
स्तच्छिष्यैर्बहुभिर्महात्मभिरथो मह्यां प्रतिष्ठापितम्॥

इस क्रम के अ नुसार शिव-गुह-सनत्कुमार-बृहस्पति-इन्द्र-शेषनाग-पिङ्गल **छन्दःशास्त्र** के परम्परागत आचार्य रहे हैं। इन दोनों ही क्रमों में **आदिप्रवर्तक**के रूप में देखा जाय तो **शिव** ही प्रतिष्ठापित सिद्ध होते हैं। अतः यह तो प्राय: सिद्ध है कि **शङ्कर** ही **छन्दःशास्त्र** के **प्रवर्तक**रहे हैं।पुनः वेदों में छन्दों का प्रयोग होने के कारण इसकी प्राचीनता को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है। वैदिकऋषियों ने विविध प्रकार के छन्दों का प्रयोग वेदों में किया है। मुख्यतः **सात**प्रकार के **वैदिकछन्दों** का प्रयोगमिलता है—गायत्री ,उष्णिक्,अनुष्टुप्,बृहती,पङ्क्ति,त्रिष्टुप् तथा जगती। **डॉ०सुधीकान्तभारद्वाज** ने (वैदिकसाहित्य का आलोचनात्मकइतिहास : भाग-दो ,पृष्ठ : १५९-१६०) इन छन्दों के ही कुछ और भेदों को लेकर उन्हें तीन भागों में बाँटकर सुव्यवस्थित किया है। वहाँ वे लिखते हैं—

"**छन्दःशास्त्र** बहुत प्राचीन वेदाङ्ग है। ऋग्वेद के मन्त्र ही इस बात के प्रमाण हैं कि ऋग्वेद के रचनाकाल में वैदिकऋषियों को छन्दःशास्त्र का पूर्ण ज्ञान था। ऋग्वेद में छन्दों के अनेकप्रकार प्रयुक्त हुए हैं। ऋग्वेद के मन्त्रों को हम तीन मुख्य भागों में बाँट सकते हैं—१. **अनुष्टुप् वर्ग के छन्द**—गायत्री,अनुष्टुप्,पङ्क्ति,महापङ्क्ति,शक्करी।

२. **त्रिष्टुप् वर्ग के छन्दः**—त्रिष्टुप्,जगती,विराज,द्विपाद विराज।

३. **प्रगाथ अथवा लयात्मकछन्दः**—उष्णिक्,ककुभ,बृहती,सतोबृहती,अत्यष्टि।

इन छन्दों को परस्पर मिलाकर भी अनेक **छन्दस्** बनाए गए हैं। **आर्नोल्ड** ने लगभग ८८ प्रकार के छन्द स्**ऋग्वेद** में खोजे हैं। उन्होंने कहा है कि वैदिक **ऋषि** नए से नए छन्दों की रचना में लगे रहते थे। वे एकअच्छे शिल्पी के शिल्प से अपने छन्दस् की तुलना करते थे तथा ऐसा मानते थे कि नए **छन्दस्** में गाए हुए गीत से देवता अधिकप्रसन्न होते हैं।इससे प्रतीत होता है कि **ऋग्वैदिक**काल में ही**छन्दःशास्त्र** का विकास हो चुका था। परन्तु **छन्दःशास्त्र** सेसम्बद्ध ग्रन्थ

हमें अधिकनहीं मिल पाए हैं। **आरण्यक**तथा **उपनिषदों** में छन्दःशास्त्र से सम्बन्धित अनेकसन्दर्भ मिलते हैं। परन्तु इसका विकसित रूप हमें **सूत्रकाल** में ही मिलता है"।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि छन्दों का इतिहास ही नहीं, स्वरूप भी वैदिककाल में बनना प्रारम्भ हो गया था। इस दृष्टि से **शाङ्ख्यायनश्रौतसूत्र**,**ऋक्प्रातिशाख्य**,**निदान-सूत्र** आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं ,जिनमें हमें **वैदिकछन्दों** का विकसित स्वरूप-विवेचन प्राप्त होता है। शिक्षाग्रन्थों में **छन्दः** की गणना **वेदाङ्गों** में की गई है। उसे वेदों का **पैर** कहा गया है—**"छन्दः पादौ तु वेदस्य"।**

वैदिकछन्दों के अन्य मौलिक **छन्दःशास्त्र** निश्चित ही रहे होंगे ,किन्तु वे आज उपलब्ध नहीं हैं। वैदिकएवं लौकिकछन्दों का विवेचकउपलब्ध **प्राचीनतम** ग्रन्थ आचार्य **पिङ्गल** का **छन्दःशास्त्र** ही है। अतः **पिङ्गल** छन्दःशास्त्र के **आद्याचार्य** कहे जा सकते हैं। पिङ्गल के देशकाल का ठीक -ठीकज्ञान अभी तकनहीं हो सका है। परम्परा के अनुसार उन्हें महर्षि **पाणिनि**का **अनुज** माना जाता है। **पिङ्गल** के **छन्दःशास्त्र** पर अनेकटिकाएँ लिखी जा चुकी हैं। **भट्टहलायुध** ने 'मृतसञ्जीवनी' नामकविख्यात टीका लिखी थी,जो आज भी उपलब्ध है। 'पिङ्गलनागछन्दोविचितिभाष्य' नामकभाष्य श्री **यादवप्रकाश** ने लिखा है ,जो अभी तकअप्रकाशित है। इनके पश्चात् आचार्य **भास्करराय** ने 'छन्दःकौस्तुभ' नामकग्रन्थ का प्रणयन किया। इन्होंने **वृत्तरत्नाकर** पर 'मृतजीवनी' नामकव्याख्या भी लिखी थी। पचासवें वर्ष में **भास्करराय** ने 'वृत्तचन्द्रोदय' नामकप्रौढ़ छन्दःशास्त्र का प्रणयन किया था। अन्त में इन्होंने **पिङ्गलसूत्र** पर 'भाष्यराज' की रचना की थी। **भास्करराय** ने छन्दःशास्त्र की महती सेवा की।

आचार्य पिङ्गल की परम्परा में **जनाश्रय** ने 'जनाश्रयीछन्दोविचिति' नामकग्रन्थ की रचना भी की। ये भी छन्दःशास्त्रीय आचार्यों की परम्परा में गिने जाते हैं। **पिङ्गलच्छन्दःशास्त्र** की परम्परा में **जयदेव** की गणना भी की जाती है। इन्होंने लगभग **१०००ई०** के आस-पास 'जयदेवच्छन्दः' नामकग्रन्थ की रचना की थी। इनके अतिरिक्त कन्नड़देशीय **जयकीर्ति** का 'छन्दोऽनुशासन' भी विख्यात ग्रन्थ उपलब्ध है। 'रत्नमञ्जूषा' नामकलघुकाय , किन्तु मौलिक**छन्दःशास्त्र** का प्रणयन भी हुआ था,किन्तु उसके रचयिता का कहीं उल्लेख प्राप्त नहीं होता है।

छन्दःशास्त्रों में **प्रथमशती** ई०पू० के महाकवि **कालिदास**की'श्रुतबोध'नामक एकविख्यात रचना है। जिसमें ४४ श्लोकों में कुल **३७** छन्दों का स्वरूप-वर्णन है। इसमें लौकिकछन्दों का बड़ी सरस एवं सुबोध भाषा में वर्णन किया है। इस ग्रन्थ का वैशिष्ट्य यह है कि छन्दों के लक्षण ही इसके उदाहरण भी हैं। इस लेखकने लक्षण व उदाहरण पृथक्-पृथक् नहीं दिए हैं।

क्षेमेन्द्र का 'सुवृत्ततिलकम्' छन्दःशास्त्र का बहुत ही सुन्दर ग्रन्थ है। इसमें आचार्य **क्षेमेन्द्र** ने यह बताया है कि किस रस के वर्णन में किस छन्दस् का प्रयोग करना चाहिए। आचार्य **क्षेमेन्द्र** ने सर्वप्रथम छन्दों के इस प्रकार के प्रयोग प्रस्तुत कर एकनए युग का प्रारम्भ किया। ये काव्यों में अधिकाधिकछन्दों के प्रयोग को महत्त्व देते थे। जो कवि कम छन्दों का प्रयोग करता है,उसे इन्होंने 'दरिद्रकवि' कहा है। **कश्मीर** के आचार्य **क्षेमेन्द्र** का काल **११वीं** शती माना जाता है।

केदारभट्ट का 'वृत्तरत्नाकर' नामकछन्दःशास्त्र **१३वीं** शती का प्रसिद्ध एवं अतीव प्रौढ़ ग्रन्थ माना जाता है। इसमें ६ (छह) अध्याय और १३६ श्लोकहैं। यह सूत्रात्मकशैली में न होकर छन्दोबद्ध है। **छन्दस्** का लक्षण भी उसी छन्द स् में करके **केदारभट्ट** ने इस परम्परा का विकास किया। इस लोकप्रिय ग्रन्थ पर अनेकटीकाओं का प्रणयन हुआ। त्रिविक्रम,सुल्हण,सोमचन्द्र-गणि, रामचन्द्र-विबुध,समयसुन्दर-गणि,नारायण-भट्ट,भास्कर,जनार्दन-विबुध,सदाशिव,श्रीकण्ठ,विश्वनाथ,कृष्णसार,करुणाकरदास,दिवाकर आदि की टीकाएँ सुप्रसिद्ध हैं।

आचार्य **हेमचन्द्र** ने 'छन्दोऽनुशासन' नामकग्रन्थ में **प्राकृत** एवं **अपभ्रंश** छन्दों का स्वरूप बताया है। आचार्य **हेमचन्द्र** ने 'छन्दश्चूडामणि' टीका लिखकर इस ग्रन्थ को और अधिकउपयोगी बना दिया है। वैद्य **गोपालदास** के पुत्र **गङ्गादास** नामकविद्वान् ने 'छन्दोमञ्जरी' नामकविख्यात छन्दःशास्त्र लिखा जो सर्वाधिकप्रचलित है। ये वैष्णव धर्म के अनुयायी थे,अतः छन्दों के उदाहरण राधाकृष्ण की लीलाओं पर आधारित हैं। ये सभी उदाहरण स्वरचित ही हैं। विद्वान् लेखकने **छहस्तबकों** में सञ्ज्ञा,मात्रा,वर्णवृत्त आदि के सुस्पष्ट लक्षण किए हैं। **छन्दस्** का लक्षण उसी छन्दस् का उदाहरण भी है। **गङ्गादास** उड़ीसा के विख्यात रचनाकार थे। इन्होंने अच्युतचरित ,कंसारिशतक,दिनेशशतकजैसी रचनाएँ की हैं। इनका समय **१८**वीं शती का उत्तरार्ध माना जाता है।

इस प्रकार हमने जाना कि छन्दःशास्त्रविषयकग्रन्थों की भारत में सुदीर्घ परम्परा रही है ,जिनमें से अधिकांश ग्रन्थ **पिङ्गल**-विरचित **छन्दःशास्त्र** का ही अनुवर्तन करते हैं। फिर भी यथासमय नवीन छन्दों का प्रणयन सुधी

छन्दःशास्त्रियों द्वारा किया गया है । इतना ही नहीं, कुछ आचार्यों ने इन छन्दों का रसानुगत प्रयोग का औचित्य भी बताया है, जिससे छन्दों का प्रयोग रसानुभूति में और अधिक सहायक सिद्ध हुआ।

छन्दस् है क्या?

छन्दस् शब्द का निर्वचन करते हुए आचार्य **यास्क**ने कहा है— **छन्दांसिछादनात्** (निरुक्त-७.३.१२) छादन करने के कारण ये **छन्दस्** कहे जाते हैं। कुछ आचार्य **चित्ताह्लादजनकंछन्दः** अथवा **चन्दतेइतिछन्दः** अर्थात् चित्त को आह्लादित करने वाला **छन्दस्** है—यह व्युत्पत्ति भी करते हैं।

वस्तुतः **छन्दस्** गति के प्रतीकहैं। इसीलिए ये**वेदों** के **पैर** बताए गए हैं— **छन्दःपादौतुवेदस्य**। फिर भी ये भाषागत त्रुटियों को छिपा देते हैं ,अतः **छन्दांसिछादनात्** निर्वचन सार्थकहै। यह निर्वचन **छदिँआवरणे** धातु के आधार पर किया गया है। श्रोताओं को छन्दोबद्ध रचना सुनने पर बड़े आनन्द की प्राप्ति होती है। क्योंकि उसमें यति ,गति,लय आदि से **गेयता** का आधान हो जाता है। अतः **चित्ताह्लादजनकत्व** भी **छन्दस्** का गुण है। यहाँ **चदिँआह्लादनेदीप्तौ** धातु से **चन्देरोदश्चछः**(३.३.२३२) सूत्र द्वारा **चद्** को **चन्द्** एवं **च**कार को **छ**कार आदेश होने के कारण **छन्द्** हो जाता है। **छन्द्** को पुनः **असुँन्**(अस्) प्रत्यय होकर **छन्दस्** प्रातिपदिकबना है। **अमरकोश** में **छन्दः** शब्द के दो अर्थ किए गए हैं— **पद्य**व**अभिलाषा**—"छन्दः पद्येऽभिलाषे च"(३.३.२३२)।

मेदिनीकोश में **छन्दः** पद के **चार** अर्थ किए गए हैं—पद्य (श्लोक),वेद,स्वैराचार तथा अभिलाषा—

छन्दः पद्ये च वेदे च स्वैराचाराभिलाषयोः॥

यह तो व्युत्पत्तिमूलकएवं कोशगत अर्थों का निदर्शन मात्र था। वस्तुतः **'छन्दः'** एककाव्य की रचनाशैली है। **काव्य** प्रथमदृष्ट्या **गद्य** एवं **पद्य**—दो विधाओं में विभक्त है। **गद्य** में छन्दों का अनुशासन नहीं है ,जबकि **पद्य** में काव्य छन्दोबद्ध रहता है। **छन्दः** (छन्द) को **श्लोक**या **पद्य** भी कहा जाता है। लौकिक**संस्कृत** में इसका प्रारम्भ महर्षि **वाल्मीकि** के इस श्लोकसे हुआ माना जाता है—

मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

इसका प्रमाण महाकवि **कालिदास** का यह कथन है , जिसमें स्पष्ट रूप से उसे **श्लोक**कहा है— **निषादविद्धाण्डजदर्शनोत्थःश्लोकत्वमापद्यतेयस्यशोकः**। (रघुवंश)ध्वन्यालोककार **आनन्दवर्धन** ने भी ऐसा ही कहा है— **शोकःश्लोकत्वमागतः**। (ध्वन्यालोक, प्र०उ०)। अतः यह कहा जा सकता है कि **वाल्मीकि** संसार के प्रथम लौकिकसंस्कृत के **कवि** हैं,जिन्होंने **प्रथम** श्लोककी रचना की थी। इस प्रकार छन्दोबद्ध रचना **श्लोक**या **पद्य** के रूप में भी विख्यात हुई। **पद्य** शब्द का अर्थ है**—पद्यते वा पदाः सन्ति अस्य इति पद्यम्**। जिस छन्दस् में चार **चरण** होते हैं, उसे **पद्य** कहा जाता है। **अमरकोश**में कहा है**—पद्ये यशसि च श्लोकः**। इस प्रकार यह **छन्दः** ही **पद्य** या **श्लोक**कहा जाता है।**अनुष्टुभ्** छन्दस् को भी श्लोकअथवा पद्य कहा जाता है। क्योंकि **अष्टाक्षरपदचतुष्पदअनुष्टुभ्** का ही सर्वप्रथम इस धरा पर अवतरण हुआ था। यह **छन्दस्** यति , विराम,गति,लय,नियताक्षर,नियतमात्रा आदि विशेषताओं से युक्त होता है ,जो अनेकभेदों में विभक्त किया गया है।

प्रायः यह माना जाता है कि**रामायण** में तेरह (१३),**महाभारत** में अठारह (१८),**भागवतपुराण** में पच्चीस (२५) छन्दों का प्रयोग हो चुका था। आगे चलकर इन छन्दों की सङ्ख्या में और अधिकविस्तार हुआ। ये **पचास** (५०) से भी अधिकसङ्ख्या को प्राप्त हो गए। इन छन्दों का स्वरूप मुख्यतः अक्षरों एवं मात्राओं की नियत सङ्ख्या तथा क्रम पर अवस्थित है। अतः सर्वप्रथम **छन्दःस्वरूप** के यति ,गति,मात्रा,गुरु,लघु,गण आदि मूल तत्त्वों पर विचार कर लेना चाहिए।सभी प्रकार के छन्दों में यति,गति,मात्रा,गुरु,लघु,गण,अक्षर आदि में से कुछ नियत रहते हैं। उनके कारण ही उस छन्दस् का व्यक्तिगत स्वरूप बनता है। सभी छन्दों में इनके स्थान आदि पृथक्-पृथक् नियत हैं ,अतः इन्हें समझना बहुत आवश्यकहै।

अक्षर—छन्दःशास्त्र में **अक्षर** का अर्थ है—शब्द का वह भाग , जिसे एकही बार में एकसाथ उच्चारित किया जा सके। वस्तुतः **स्वर** ही **अक्षर** होता है ,किन्तु **छन्दोमीमांसा** में एकया अधिकव्यञ्जनों सहित या रहित स्वरों को **अक्षर** कहा जाता है। जैसे**—तन्त्र** इस शब्द में दो अक्षर हैं**—त** एवं **न्त्र**। अंग्रेजी में **अक्षर** को **Syllable** कहा जाता है।

यति—विभिन्न छन्दों में कुछ अक्षरों के बाद वक्ता रुक -रुककर उच्चारण करता है। इससे उस छन्द स् का उच्चारण और अधिकसुन्दर व श्रोता को आह्लादित करने वाला बन जाता है। विभिन्न छन्दों में नियत स्थानों पर रुकने से उस

छन्दस् की शोभा बढ़ जाती है। यह एकचरण के अन्त में होनेवाले **विराम** से भिन्न **विश्राम** होता है। फिरभी इन्हें प्राय: पर्याय ही माना जाता है। जैसाकि **छन्दोमञ्जरी** के प्रथम स्तबकमें कहा गया है—

यतिर्जिह्वेष्ट-विश्राम-स्थानं कविभिरुच्यते।
सा विच्छेदविरामाद्यै: पदैर्वाच्या निजेच्छया॥(१.१२)

उच्चारणकाल में जीभ जहाँ अपनी इच्छा से रुकजाती है ,उसे **यति** कहते हैं। यह **यति** उच्चारणकर्ता की इच्छा के अधीन होती है। इसके विच्छेद ,विराम,विरति,विश्राम पर्याय हैं। महाकवि **दण्डी**द्वाराअपने ग्रन्थ में भी ऐसा ही कहा गया है—

श्लोकेषु नियतस्थाने पदच्छेदं यतिं विदु:।
तदपेतं यतिभ्रष्टं श्रवणोद्वेजनं यथा॥

कविकल्पलता में भी **यति** का प्रयोजन बताते हुए कहा गया है कि "सुधीजनों को जिससे उद्वेग न हो ,**छन्दस्** में एतदर्थ मधुरता की आवश्यकता होती है,वह मधुरता **यति** से प्राप्त होती है"—

एवं यथा यथोद्वेग: सुधियां नोपजायते।
तथा तथा मधुरतानिमित्तं यतिरिष्यते॥

लययागति—छन्दों की गेयता में **लय** या **गति** का बहुत महत्त्व है। यह गति **तीन** प्रकार की होती है—**द्रुत**,**मध्य**और**विलम्बित**। अलग-अलग स्थानों पर इनका प्रयोग किया जाता है। **स्वाध्याय** में द्रुतलय,**उपदेश** में मध्यलय तथा **अध्यापन** में विलम्बित लय का प्रयोग उचित माना जाता है।

लघु—छन्दों में प्रयुक्त अक्षरों को दो रूपों में ही स्वीकार किया जाता है— **लघु** तथा **गुरु**। इनमें **लघु** अक्षर वह होता है,जिसकी **एकमात्रा** होती है। वस्तुतः **छन्दःशास्त्र** में **लघु** या **गुरु** स्वर ही होते हैं। स्वर का तृतीय भेद **प्लुत** भी होता है,किन्तु **छन्दःशास्त्र** में इसका प्रयोग नहीं किया जाता। यहाँ **लघु** से तात्पर्य है— **एकमात्रिकस्वर**। यानी **ह्रस्व** (एकमात्री भवेद्ध्रस्व:) स्वर ही **लघु** कहलाता है। कुछ विशेष परिस्थितियों में **लघु** (ह्रस्व) स्वर भी **गुरु** हो जाता है। आगे इसका विवेचन किया जा रहा है।

गुरु—वह अक्षर जो दो मात्राओं के काल से युक्त होता है ,**'गुरु'** कहलाता है। यानी छन्दःशास्त्र में **दीर्घ** स्वर ही **गुरु** होता है। ये स्वर व्यञ्जनों में संयुक्त भी हो सकते हैं तथा स्वतन्त्र रूप से भी अवस्थित रह सकते हैं। **व्यञ्जन** कभी भी ह्रस्व,दीर्घ या प्लुत नहीं होता। वह तो नित्य **अर्द्धमात्रिक**ही होता है। व्यञ्जन में स्थित **स्वर** ही ह्रस्व ,दीर्घ या प्लुत होता है। दीर्घ स्वर से युक्त व्यञ्जन ही स्वर के कारण **गुरु**(दीर्घ) प्रतीत होता है।

गुरु-लघु का विधान—छन्दोविधान में कौन-सा स्वर **लघु** होता है तथा कौन-सा स्वर **गुरु** होता है?एतदर्थ कुछ नियमों का विधान किया गया है। **अ,इ,उ,ऋ,लृ**—स्वरों से युक्त व्यञ्जन तथा स्वयं ये स्वर **'लघु'** ही होते हैं;किन्तु **अनुस्वार** से युक्त,आ-ई-ऊ-ॠ-ए-ऐ-ओ-औ स्वरों से युक्त व्यञ्जन तथा ये सभी दीर्घ स्वर,विसर्ग से युक्त ह्रस्व स्वर या विसर्ग के साथ ह्रस्व-स्वर-युक्त व्यञ्जन,संयोग सञ्ज्ञकव्यञ्जनों से पूर्व में स्थित अक्षर एवं चरण के अन्त में स्थित ह्रस्व स्वर या उससे युक्त व्यञ्जन भी **गुरु** माने जाते हैं। जैसाकि **छन्दोमञ्जरी**में कहा है—

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्ण: संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥(छन्दोमञ्जरी,प्र०स्त०-११)

लघु वर्ण को छन्दों में(।) **चिह्न** से अङ्कित करते हैं व **गुरु** वर्णोंको(ऽ) **चिह्न** से दिखाया जाता है। जैसे~

ऽऽ। ऽऽ।। ऽ।ऽऽ
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणि:

मात्रा—मात्रा से तात्पर्य है—पलकझपकने में लगने वाला समय। इसे **ह्रस्व** स्वर का उच्चारण-काल माना जाता है। अर्थात् **लघु** स्वर या उससे युक्त व्यञ्जन का काल **एकमात्रा** होता है। **दीर्घ** स्वर या उससे युक्त व्यञ्जन का काल **द्विमात्रिक**होता है। यानी **गुरु** वर्ण में दो मात्राओं का काल होता है। **मात्रिक**छन्दों में उसके चरणों की रचना **मात्राओं** के आधार पर होती है। अर्थात् **मात्रिक**छन्दों में मात्राओं की प्रधानता होती है। जैसे— ।।।।। ऽ। ऽऽ ऽ।।ऽऽ।।।।।ऽऽ

सुभगसलिलावगाहा:पाटलसंसर्गसुरभिवनवाता:।
ऽऽ।।।।ऽऽ ।।ऽ ।।ऽ।।।ऽऽ
प्रच्छायसुलभनिद्रादिवसा: परिणामरमणीया:॥

© Associated Asia Research Foundation (AARF)

गण—गण्-धातु से **अच्** प्रत्यय करने पर **गण** शब्द का निर्माण होता है। जिसका अर्थ है—समूह ,झुण्ड,समुदाय आदि। **छन्दःशास्त्र** में **गण** वर्णात्मकऔर कलात्मकहोते हैं। **वृत्तों** में **गण** का निर्माण तीन वर्णों से होता है। इनकी आठ प्रकार की स्थितियाँ होने से ये गण **आठ** प्रकार के होते हैं। ये **गण** हैं—यगण,मगण,तगण,रगण,जगण,भगण,नगण व सगण। इनके **स्वरूप** व **सङ्ख्या** को जानने के लिए एकसूत्र बहुत प्रचलित है,जिससे काम अति सरल हो जाता है। वह है—**यमाताराजभानसलगा**।

इस सूत्र के अन्त में क्रमश: स्थित **ल**—लघु का वाचकहै तथा **गा**—गुरु का सूचकहै। **छन्दोमञ्जरीकार** ने जो बात इतने विस्तार से कही है ,उसे इस सूत्र में बहुत ही संक्षेप में कह दिया गया है। **छन्दोमञ्जरीकार** ने **प्रथमस्तबक**में गण-परिचायकश्लोकइस प्रकार दिए हैं—

म्य - स्त - ज - भ्र - गैर्लान्तैरेभिर्दशभिरक्षरैः।
समस्तवाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना॥७
मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥८
गुरुरेको गकारस्तु लकारो लघुरेककः।
क्रमेण चैषां रेखाभिः संस्थानं दर्श्यते यथा॥९॥

ये गण मात्राओं से इस प्रकार बनते हैं—

यगण = । ऽ ऽ	**मगण =** ऽ ऽ ऽ
तगण = ऽ ऽ ।	**रगण =** ऽ । ऽ
जगण =। ऽ ।	**भगण =** ऽ । ।
नगण =। । ।	**सगण =** । । ऽ

छन्दःशास्त्र में **चतुष्कलात्मक**गणों की व्यवस्था भी की गई है। वस्तुतः इनमें एक **गण** ही चतुष्कलात्मकहोता है। उसे **चतुर्लघु** कहा जाता है। अन्य गणों में तीन-तीन मात्राओं का ही समावेश होता है। जिन्हें क्रमश: **सर्वगुरु** (मगण) ऽ ऽ ऽ,**अन्तगुरु** (सगण)। । ऽ,**मध्यगुरु** (जगण) । ऽ।,**आदिगुरु** (भगण) ऽ। । तथा **चतुर्लघु** ।।।। कहा गया है। कुछ आचार्य चार मात्राओं से युक्त **सर्वगुरु** (मगण) ऽ ऽ,**अन्तगुरु** (सगण)। । ऽ,**मध्यगुरु** (जगण) । ऽ। ,**आदिगुरु** (भगण) ऽ । । तथा **चतुर्लघु** (नगण)।।।। को ही **चतुष्कलात्मक**गणों में कहा है। यही मत अधिकउपयुक्त भी है। क्योंकि यहाँ सभी गणों में मात्राओं का योग चार-चार ही आता है। ये **गण** पाँच ही हैं। **आर्या** आदि **जातिच्छन्दों** के ये ही मापदण्ड हैं।

छन्दःप्रभेद-विवेचन :—

संस्कृत भाषा दो प्रकार की है —**वैदिकी** तथा **लौकिकी**। इस आधार पर **छन्दोभेद** भीप्रथम-दृष्ट्या द्विधा हैं—**वैदिकछन्दस्**तथा **लौकिकछन्दस्**।

वैदिक छन्दस् —वेदों में मुख्य रूप से सात छन्द स् माने गए हैं—गायत्री ,अनुष्टुभ्,त्रिष्टुभ्,उष्णिक्,जगती,पृथ्वी एवं पङ्क्ति।

लौकिकछन्दस्—प्रथमतः द्विधा होते हैं—**वृत्त** तथा **जाति**। **वृत्त**छन्दों को ही **वार्णिकछन्दस्**कहते हैं। क्योंकि ये वर्णों की संख्या के आधार पर बनते हैं। अर्थात् वर्णों की संख्या के नियत होने के कारण ही ये **वार्णिक**हैं। इन्हें **वर्णच्छन्दस्**या **गणिकच्छन्दस्**भी कहा जाता है। यद्यपि यहाँ गण-व्यवस्था भी रहती है,किन्तु वर्णों की संख्या का भी उतना ही महत्त्व है। **जातिच्छन्दों** का अपर नाम **मात्रिकच्छन्दस्**है। यहाँ मात्राओं की प्रधानता है। **गण-व्यवस्था** यहाँ गौण रहती है। पुनः इन भेदों के प्रभेद भी विभिन्न आचार्यों ने पृथक्-पृथक् बताए हैं। छन्दोमञ्जरीकार **श्रीगङ्गादास** ने लिखा है—

पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा।
वृत्तमक्षरसङ्ख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत्॥(प्र०स्त०,४ श्लोक)

वृत्त—इसके तीन भेद होते हैं— **समवृत्त,अर्द्धसमवृत्त** और **विषमवृत्त। समवृत्त** में चारों चरण समान होते हैं। अर्थात् जिसके प्रत्येकचरण में गण-व्यवस्था उसी क्रम में हो तथा अक्षरों की सङ्ख्या निश्चित हो ,उसे **समवृत्त** कहते हैं। **अर्द्धसमवृत्त** में **विषम** (१,३)व **सम** (२,४)चरणों की गण-व्यवस्था एवं अक्षर- संख्या एकजैसी होती है। विषमवृत्त के चारों चरणों में गण-व्यवस्था तथा अक्षर- संख्या भिन्न-भिन्न होती है। कहीं गण-व्यवस्था समान है तो अक्षर- संख्या भिन्न हो जाती है। कहीं अक्षर- संख्या समान है तो गण-व्यवस्था भिन्न हो जाती है। जैसाकि छन्दोमञ्जरीकार **श्रीगङ्गादास** ने कहा है—

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सममर्द्धसमं वृत्तं विषमञ्चेति तत्त्रिधा।
समं समचतुष्पादं भवत्यर्धसमं पुनः॥५॥
आदिस्तृतीयवद् यस्य पादस्तुर्यो द्वितीयवत्।
भिन्नचिह्नचतुष्पादं विषमं परिकीर्तितम्॥६॥

जातिच्छन्द—जातिच्छन्दों को **मात्रिकच्छन्द** भी कहा जाता है। पूर्व में बतलाया जा चुका है कि **जातिच्छन्दों** में मात्राओं की गणना के आधार पर चरणों का निर्माण होता है। जैसाकि कहा है— **जातिर्मात्राकृता भवेत्** (छन्दोमञ्जरी)। **वृत्तमञ्जरी** में कहा है कि जहाँ मात्राओं से गणना होती है ,वहाँ **'जातिच्छन्द'**होता है— **मात्राभिर्गणना यत्र सा जातिरभिधीयते।** जातिच्छन्दोंमें आर्या,वैतालीय,औपच्छन्दसिकतथा मात्रासमकआते हैं। **आर्या** के नौ भेद होते हैं— पथ्या,विपुला,चपला,मुखचपला,जघनचपला,गीति,उपगीति,उद्गीति तथा आर्यागीति।

छन्दों के लक्षण करते समय कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है कि उनसे संख्या की सूचना प्राप्त होती है, आइए; संख्यावाची उन शब्दों से आपका परिचय करवाएँ—

एक —चन्द्रमा,पृथ्वी।	**दो**—पक्ष, नेत्र,पृथ्वी
तीन —गुण, राम , अग्नि।	**चार**—वेद, वर्ण , युग और आश्रम।
पाँच —शर, इन्द्रिय, भूत।	**छः**—शास्त्र, रस , ऋतु।
सात —अश्व, मुनि, लोक।	**आठ**—वसु, याम , सिद्धि, भोगी।
नौ —अंक, ग्रह , द्रव्य, निधि।	**दस**—दिग्, अवतार
ग्यारह —रुद्र।	**बारह**—सूर्य, मास

क.**मात्रिकच्छन्द** (जातिच्छन्द)—

१. **आर्या—**

यस्या: प्रथमे पादेद्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीयेचतुर्थके पञ्चदश सार्या॥

सन्दर्भ—यह **मात्रिक**छन्दस् है। मात्रिकछन्दस् को **जाति**कहा जाता है। **आर्या**एकजाति छन्दः है। आर्या छन्दस् नौ प्रकार का होता है—पथ्या, विपुला, चपला, मुखचपला, जघनचपला, गीति, उपगीति, उद्गीति, आर्यागीति।

अर्थ—जिस छन्दस् के प्रथम व तृतीय पादों (चरणों) में बारह-बारह मात्राएँ हों ,द्वितीय चरण में अठारह और चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ हों,उसे **आर्या** कहते हैं। जैसे—

। । । । । ऽ । ऽऽ ऽ । । ऽऽ। ॥ । । । ऽऽ
सुभगसलिलावगाहा:पाटलसंसर्गसुरभिवनवाता:।
ऽ ऽ । । । । ऽऽ । । ऽ । । ऽ॥ । ऽऽ
प्रच्छायसुलभनिद्रादिवसा: परिणामरमणीया:॥

ख.**वार्णिकच्छन्द:—**

विषमवृत्तम्—इसमें वर्णों की संख्या तो नियत रहती है, लेकिन गण-व्यवस्था अनियत रहती है।

२.**पथ्यावक्त्रम्—**

युजोश्चतुर्थतो जेन पथ्यावक्त्रं प्रकीर्तितम्।

सन्दर्भ—यह अनुष्टुप् का ही भेद है। उसकी तरह यह भी **विषमवृत्त** है।

अर्थ—जिसके **सम** चरणों (२ व ४) में चतुर्थ वर्ण के बाद **जगण** आए तो ,उस छन्दः को **'पथ्यावक्त्र'**कहते हैं। इसके प्रत्येकचरण में **आठ-आठ**अक्षर होते हैं। जैसे—

।ऽ।
यद्यत् साधु न चित्रे स्यात्क्रियते तत्तदन्यथा।
।ऽ।
तथापि तस्या लावण्यंरेखया किञ्चिदन्वितम्॥१॥

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

३.**अनुष्टुप्—**

पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः।
षष्ठं गुरु विजानीयात् शेषेष्वनियमो मतः॥

सन्दर्भ—यह **विषमवृत्त** है। यतः इसके चारों चरणों में **गुरु व लघु** विषयकनियम कहीं-कहीं आवश्यकनहीं है। इसके के चारों चरणों में ८×४=३२ अक्षर होते हैं।

अर्थ—(अनुष्टुप्) के चारों चरणों में **पञ्चम** वर्ण **लघु** एवं **षष्ठ** वर्ण नित्य **गुरु** होताहै।द्वितीय एवं चतुर्थ चरणों में **सातवाँ** वर्ण **लघु** होता है। शेष वर्णों में **गुरु** तथा **लघु** विषयककोई नियम नहीं होता। यथा—

। ऽ । ऽ।
वागर्थाविव सम्पृक्तौवागर्थप्रतिपत्तये।
। ऽ ।ऽ।
जगतः पितरौ वन्देपार्वतीपरमेश्वरौ॥१

—समवृत्तम् —

४.**इन्द्रवज्रा—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।**

सन्दर्भ—यह **समवृत्त**है। इसके प्रत्येकचरण में **११-११** वर्ण होते हैं। इस वृत्तमें कुल ४४ वर्ण होते हैं। **गण** की व्यवस्था क्रमशः इस प्रकार रहती है—

अर्थ—जिसके चारों चरणों में क्रमशः **तणग,तगण,जगणव दो गुरु** का विधान किया जाय ,उसे **इन्द्रवज्रा**कहा जाता है। जैसे—

ऽऽ । ऽ ऽ ।।ऽ। ऽऽ ऽऽ। ऽ ऽ। ।ऽ।ऽऽ
अर्थो हि कन्या परकीय एवतामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
ऽऽ ।ऽऽ।। ऽ ।ऽऽ ऽऽ।ऽ ऽ। । ऽ। ऽऽ
जातो ममायं विशदः प्रकामंप्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥

भारतीय छन्दःव्यवस्था बहुत ही सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक है, जो हजारों वर्षों की यात्रा से वर्त्तमान स्वरूप को प्राप्त हो सकी है। वेदादि शास्त्रों से लेकर वर्त्तमान तक उन छन्दों का भारतीय लेखक अनवरत रूप से प्रयोग करते आ रहे हैं। अतः इसकी प्राचीनता में भी नवीनता छिपी हुई है और इसकी लोकप्रियता इसके महत्त्व को भी बता रही है।

—अर्धसमवृत्तम् —

पुष्पिताग्रा—

अयुजि नयुगरेफतो यकारो।
युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा॥

सन्दर्भ—यह **अर्द्धसमवृत्त** है। यह ऐसा छन्दस् है, जिसके प्रथम व तृतीय चरणों में १२-१२ वर्ण तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरणों में **१३-१३** वर्ण होते हैं। अन्य अर्धसमवृत्तों में भी इसी प्रकार से व्यवस्था रहती है।

अर्थ—जिसके प्रथम व तृतीय चरणों में क्रमशः नगण ,नगण,रगण व यगण हों तथा द्वितीय व चतुर्थ चरणों में क्रमशः नगण,जगण,जगण,रगण और एकगुरु हों तो, उसे **पुष्पिताग्रा**कहते हैं। जैसे—

।।। । ।। ऽ । ऽ । ऽऽ। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽऽ
तुरगखुरहतस्तथाहि रेणु -र्विटपविषक्तजलार्द्रवल्कलेषु।
। । । । । । ऽ। ऽ। ऽ ऽ। । । । ऽ। । ऽ । ऽ। ऽऽ
पततिपरिणतारुणप्रकाशःशलभसमूह इवाश्रमद्रुमेषु॥

---***---***---

राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू (राजस्थान)